Right Education	**सम्यक् शिक्षा**
7 The student must be free. Otherwise he cannot be sensitive. If he is not free in the study of mathematics, enjoying mathematics, giving his heart to it, which is freedom, he cannot study it adequately. And to look at those flowers, to look at that beauty, he must also be free. So there must be freedom first. That means I must help that boy to be free. Freedom implies order, freedom does not mean allowing the boy to do what he likes, to come to lunch and to class when he likes.	विद्यार्थी को स्वतन्त्र होना चाहिए, अन्यथा वह संवेदनशील नहीं हो सकता। यदि वह गणित के अध्ययन में स्वतंत्र नहीं है, यदि वह गणित का आनंद नहीं ले रहा है तथा उसमें अपना दिल नहीं लगा रहा है, जो वास्तविक स्वतंत्रता है, तो वह इस विषय का समुचित अध्ययन नहीं कर सकता। उन फूलों को देखने के लिए, उनके सौन्दर्य को देखने के लिए भी उसे स्वतंत्र होना चाहिए। अतः पहले स्वतंत्रता होनी चाहिए। इसका अर्थ है कि स्वतंत्र होने में उस विद्यार्थी की मुझे सहायता करनी चाहिए। स्वतंत्रता का अर्थ है सुव्यवस्था, स्वतंत्रता का अर्थ विद्यार्थी को इस बात की छूट देना नहीं है कि वह जो चाहे सो करे, वह लंच के लिए तथा क्लास के लिए जब चाहे तब आये।
18 In examining, working, in learning, one understands that the highest form of sensitivity is intelligence. That sensitivity, that intelligence can come about only in freedom, but to convey that to a child requires a great deal of intelligence on our part. I would like to help him to be free and yet at the same time have order and discipline, without conformity. To examine anything one must have not only freedom but discipline. This discipline is not something from outside which has been imposed upon the child and according to which he tries to conform. In the very examination of these two processes - the technological and the religious, there is attention and therefore discipline. Therefore one asks, "How can we help that boy or girl to be free completely and yet highly disciplined, not through fear, not through conformity, not partially free but completely free and yet highly disciplined at the same time?" Not one first and then the other. They both go together.	जाँच-पड़ताल करने, कार्य करने तथा सीखने की प्रक्रिया में हम इस बात को समझ पाते हैं कि संवेदनशीलता का सर्वोच्च रूप प्रज्ञा है। वह संवेदनशीलता और प्रज्ञा स्वतंत्रता में ही हो सकती है, परंतु इस बात की समझ एक बच्चे को दिलाने के लिए हमारे पास अत्यधिक सूझ-बूझ होनी चाहिए। स्वतंत्र होने में मैं निश्चित ही उसकी सहायता करना चाहूँगा परंतु इसके साथ-साथ उसके पास सुव्यवस्था और अनुशासन का बोध भी होना चाहिए, बिना किसी अनुसरणवृत्ति के। किसी चीज की जाँच-पड़ताल करने के लिए हमारे पास स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि अनुशासन भी होना चाहिए। यह अनुशासन कोई बाहर की चीज नहीं है जो बच्चे पर लाद दी जाती है और जिसके अनुसार चलने की वह कोशिश करता है। वैज्ञानिक और धार्मिक इन दो प्रक्रियाओं की छानबीन में ही अवधान निहित है और इसीलिए अनुशासन भी। अतः हम यह प्रश्न कर रहे हैं, हम एक छात्र या छात्रा की सहायता कैसे करें ताकि वह पूर्णतः स्वतंत्र हो, फिर भी अत्यधिक अनुशासित हो, भय के द्वारा नहीं, अनुसरण वृत्ति के द्वारा नहीं ..... आंशिक रूप से स्वतंत्र नहीं बल्कि पूर्ण रूप से स्वतंत्र और साथ ही साथ अत्यधिक अनुशासित भी? ऐसा नहीं कि स्वतंत्रता पहले आये और अनुशासन बाद में। ये दोनों साथ-साथ चलते हैं।
19 Now, how are we to do this? Do we clearly see that freedom is absolutely essential, and that freedom does not mean doing what one likes?	अब सवाल यह है कि हम इसे कैसे करें? क्या हम इस बात को साफ-साफ देख रहे हैं कि स्वतंत्रता नितांत अनिवार्य है और स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं है कि कोई जो चाहे सो करे। आप जो चाहें सो नहीं कर सकते,

You cannot do what you like, because you are always in relationship in life with others. See the necessity and importance of being completely free and yet highly disciplined without conformity. See that your beliefs, your ideas, your ideologies are secondhand. You have to see all that and see that you must be absolutely free. Otherwise you cannot function as a human being.	क्योंकि जीवन में हमेशा आपका संबंध दूसरों के साथ होता है। पूर्णतः स्वतंत्र होने तथा बिना किसी अनुसरण-वृत्ति के अत्यधिक अनुशासित होने की जो आवश्यकता और महत्ता है उसे देखिए। इस बात को भी देखिए कि आपके विश्वास, मत और विचारधारा दूसरों से उधार लिये हुए है यानी वे सेकेंड हैंड हैं। आपको इस सब बातों को देखना है और इस बात का भी ध्यान रखना है कि आपको परम स्वतंत्र होना चाहिए। अन्यथा आप एक मानव के नाते अपना कर्म नहीं कर पायेंगे।
20 Now I wonder if you see this as an idea or as a fact, as factual as this ink pot. How will you, as a community of teachers, when you see the importance of the child being completely free and also realize that there must be discipline and order - how will you help him so that he flowers in freedom and order? Your shouting at the child is not going to do it; your beating the child is not going to do it, your comparing him to another is not going to do it. Any form of compulsion, bullying, or system of giving him marks or no marks is not going to do it.	मुझे मालूम नहीं कि आप इसे एक सिद्धांत के रूप में देख रहे हैं या एक तथ्य के रूप में जैसे कि आप उस दवात को बिल्कुल तथ्यात्मक रूप में देख रहे हैं। बच्चे को पूर्णतः स्वतंत्र होना चाहिए इस बात के महत्त्व को देखने और समझने के बाद आप एक शिक्षक समुदाय के रूप में बच्चे की सहायता कैसे करेंगे ताकि वह स्वतंत्रता और सुव्यवस्था में प्रस्फुटित हो? बच्चे को डाँटने-फटकारने से काम नहीं चलेगा, उसे मारने-पीटने से भी नहीं चलेगा और न ही उसकी किसी अन्य से तुलना से चलेगा। किसी तरह का दबाव, डराना-धमकाना या उसे पुरस्कार अथवा दंड देने की पद्धति से कोई लाभ नहीं होगा।
21 If you see the importance of the boy being free and at the same time highly orderly, and if you see that punishment or cajoling him is not going to produce anything, will you completely drop all that in yourself.	यदि आप इस बात के महत्त्व को देख रहे हैं कि विद्यार्थी को स्वतंत्र और साथ ही साथ अत्यधिक सुव्यवस्थित होना चाहिए और यदि आप यह भी देख रहे हैं कि उसे सजा देने या फुसलाने-बहलाने से कोई लाभ नहीं, तो क्या आप स्वयं इन चीजों को बिलकुल छोड़ देंगे?
	(''कृष्णमूर्ति ऑन एजुकेशन'' से अनूदित। शिक्षक सम्मेलन, १९९२ के लिए तैयार की गयी अध्ययन सामग्री का अंश)
THE LAKE	**झील**
The lake was very deep, with soaring cliffs on both sides. You could see the other shore, wooded, with new spring leaves; and that side of the lake was steeper, perhaps more dense with foliage, and heavily wooded. The water was placid that morning and its colour was blue-green. It is a beautiful lake. There were swans, ducks, and an	यह झील बहुत गहरी थी और उसके चारों ओर ऊँची खड़ी चट्टानें थीं। यहाँ से झील का दूसरा किनारा दिखाई पड़ता था जहाँ बहुत सारे पेड़ थे और उन पर बसंत के नये पत्ते आ गये थे। सुदूर झील का वह किनारा अधिक खड़ी ढलान पर था और वहाँ के जंगल शायद अधिक घने और झुरमुटों से भरे थे। उस दिन सुबह के समय झील की सतह शांत थी और उसका रंग नीला-हरा था। वह सचमुच एक खूबसूरत झील है। उसमें हंस और बत्तख़

occasional boat with passengers.	तैर रहे थे और कभी-कभी यात्रियों से भरी नाव भी दिखाई पड़ जाती थी।
As you stood on the bank, in a well-kept park, you were very close to the water. It was not polluted at all, and its texture and beauty seemed to enter into you. You could smell it - the soft fragrant air, the green lawn - and you feit one with it, moving with the slow current, the re-flections, and the deep quietness of the water.	झील के किनारे स्थित एक साफ-सुथरे और सुसज्जित उद्यान में खड़े होने पर लगा कि आप जल के बिल्कुल करीब हैं। जल में जरा भी प्रदूषण नहीं था और आपको ऐसा प्रतीत हुआ मानो जलकणों की संरचना और उसका सौन्दर्य आपके भीतर प्रवेश कर गया। उद्यान की हरी-भरी मखमली घास और मुलायम स्पर्श का अहसास देनेवाली सुगंधित हवा, इन सब की गंध आप ले पा रहे थे और आपको इनके साथ एकात्म होने का अनुभव हुआ तथा आपको ऐसा प्रतीत हुआ कि जल की गहरी शांति, उसका प्रतिबिम्ब एवं उसका धीमा प्रवाह, इन सबके साथ आप स्पंदित हो रहे हैं।
The Strange thing was that you felt such a great sense of affect-ion, not for anything or for anyone, but the fullness of what may be called love. The only thing that matters is to probe into the very depth of it, not with the silly little mind with its endless mutterings of thought, but with silence. Silence is the only means, or Instrument, that can penetrate into something that escapes the mind which is so contaminated.	विलक्षण बात तो यह थी कि आपको एक परम स्नेह का बोध हुआ – किसी वस्तु या व्यक्ति के लिए स्नेह नहीं बल्कि उस चीज की पूर्णता का बोध जिसे प्रेम कहा जा सकता है। महत्त्व सिर्फ जिस बात का है वह है इस प्रेम की परम गहराई में जाकर इसकी छानबीन करना, मूढ़ मस्तिष्क और इसके अंतहीन विचारों के कोलाहल के साथ छानबीन करना नहीं बल्कि मौन के साथ इसकी छानबीन करना। मौन ही वह एकमात्र साधन या उपकरण है जो उस चीज को भेद सकता है जो अन्यथा हमारे कलुषित मन की पहुँच के परे है।
We do not know what love is. We know the Symptoms of it - the pleasure, the pain, the fear, the anxiety and so on. We try to solve the Symptoms which become a wandering in darkness. We spend our days and nights in this, and it is soon over in death.	हम यह नहीं जानते कि प्रेम क्या है। हम सिर्फ इसके उन लक्षणों को जानते हैं जो सुख, दुःख, भय तथा चिंता इत्यादि हैं। हम लक्षणों का ही उपचार करने में लगे रहते हैं, जो अंधेरे में भटकने जैसा है। इसी अंधेरे में हम अपने दिन और रात बिता देते हैं और मृत्यु होने पर इनका अंत शीघ्र ही हो जाता है।
There, as you were standing on the bank watching the beauty of the water, the one issue that would solve all human problems and institut-ions, man's relationship to man, which is Society, - all would find their right place if silently you could penetrate into this thing called love.	झील के तट पर खड़े होकर जल के सौन्दर्य का अवलोकन करते हुए लगता है कि मनुष्य की सारी समस्याएँ और संस्थाएँ, मानव और मानव के बीच का संबंध, जिसे समाज कहते हैं, ये सारे अपना यथोचित स्थान ग्रहण कर लेंगे यदि कोई व्यक्ति मौन होकर उस चीज में प्रवेश कर सके जिसे प्रेम कहा जाता है।
We have talked a great deal about it.	हम लोगों ने प्रेम के संबंध में बहुत सारी बातें की हैं। हर

Every young man says he loves some woman, the priest his god, the mother her children, and of course the politician plays with it. We have really spoilt the word and loaded it with meaningless substance - the substance of our own narrow little selves. In this narrow little context we try to find the other thing, and painfully return to our everyday confusion and misery.	युवक कहता है कि मैं किसी युवती से प्रेम करता हूँ, साधु-संत अपने ईश्वर से प्रेम करते हैं, माँ अपने बच्चे से प्रेम करती है, और राजनीतिज्ञ भी इस शब्द के साथ खेलने से बाज नहीं आते। हमलोगों ने सचमुच ही इस शब्द को नष्टभ्रष्ट कर डाला है और इसे व्यर्थ के कचरे से बोझिल कर दिया है - वह कचरा जो हमारे क्षुद्र-संकीर्ण संदर्भ में हमलोग उस 'अन्य' वस्तु को पाने का प्रयास करते हैं और निराश होकर अपनी दैनिक अस्तव्यस्तता और दुर्दशा की ओर लौट आते हैं।
But there it was, on the water, all about you, in the leaf, and in the duck that was trying to swallow a large piece of bread, in the lame woman who went by. It was not a romantic identification or a cunning rationalised verbalisation. But it was there, as factual as that car, or that boat;	लेकिन वह वहाँ था, जल की सतह पर, आपके चारों ओर, पत्तों और झुरमुटों में, उस बत्तख में जो पानी पर तैरते हुए रोटी के एक बड़े टुकड़े को निगलने की कोशिश कर रहा था, उस लंगड़ी औरत में भी जो आपके पास से गुजर गयी। यह कोई काल्पनिक और भावनात्मक तादात्मीकरण नहीं था और न ही धूर्त शाब्दिक अभिव्यक्ति। वस्तुतः यह वहाँ था, उतना ही वास्तविक जितनी कि वह कार या नाव।
It is the only thing which will give an answer to all our problems. No, not an answer, for then there will be no problems. We have problems of every description, and we try to solve them without that love, and so they multiply and grow. There is no way to approach it, or to hold it, but sometimes, if you will stand by the roadside, or by the lake, watching a flower or a tree, or the farmer tilling his soil, and if you are silent, not dreaming, not collecting daydreams, or weary, but with silence in its intensity - then perhaps it will come to you.	यही वह चीज है जो हमारी सारी समस्याओं का समाधान बनेगी। समाधान नहीं क्योंकि तब समस्याएँ रहेंगी ही नहीं। हमारे पास हर प्रकार की समस्याएँ हैं और हम उस प्रेम के बिना ही उन समस्याओं को हल करने की कोशिश करते हैं और इसीलिए वे घटने के बजाय दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती और विकसित होती चली जाती है। इस प्रेम तक पहुँचने की या इसे पकड़ने का कोई पद्धति नहीं है लेकिन कभी यदि आप झील के तट पर या सड़क के किनारे खड़े होकर किसी फूल या वृक्ष का अवलोकन करें अथवा किसी किसान को खेत जोतते हुए देखें और उस क्षण आप थके हुए नहीं बल्कि आप गहन मौन के साथ खड़े हो तो शायद यह प्रेम अनायास आपके पास चला आयेगा।
When it comes, do not hold it, do not treasure it as an experience. Once it touches you, you will never be the same again. Let that operate, and not your greed, your anger or your righteous social indignation. It is really quite wild, untamed, and its beauty is not respectable at all.	और जब यह आ जाए तो इसे पकड़े रखने का प्रयास न करें, इसे एक बहुमूल्य अनुभव के रूप में संजोने की कोशिश भी न करें। एक बार यह आपको छू ले जो फिर आप वही व्यक्ति नहीं रह जायेंगे। अब आप उसी को काम करने दें, न कि लोभ, क्रोध या सामाजिक रोष को मौका दें। यह प्रेम वस्तुतः एक बेलगाम और प्रचण्ड चीज है, कोई पालतू चीज नहीं, तथा इसका सौन्दर्य प्रतिष्ठा की वस्तु नहीं है।

But we never want it, for we have a feeling that it might be too dangerous. We are domesticated animals, revolting in a cage which we have built for ourselves, - with its contentions, wranglings, its impossible political leaders, its gurus who exploit your self-conceit and their own with great refinement or rather crudely. In the cage you can have anarchy or order which in turn gives way to disorder - and this has been going on for many centuries - exploding, and falling back, changing the patterns of the social structure, perhaps ending poverty here or there. But if you place all these as the most essential, then you will miss the other.	लेकिन हम इसकी चाह कभी नहीं करते, क्योंकि हमें डर लगता है कि यह कहीं अत्यंत खतरनाक हो। हम पालतू जानवरों जैसे हैं, उन पिंजरों में चक्कर काटने वाले जिनका निर्माण हमने ही अपने लिए किया है और इन्हीं पिंजरों में मौजूद हैं हमारे कलह एवं लड़ाई-झगड़े, हमारे विलक्षण राजनीतिक नेता तथा वे आध्यात्मिक गुरु जो अत्यंत सूक्ष्म या स्थल रूप से अपने और हमारे अहंकार का शोषण करते हैं। इस पिंजरे के भीतर की स्थिति अराजक हो सकती है या सुव्यवस्थित हो सकती है; सदियों से ऐसा ही होता चला आ रहा है – परिस्थितियाँ विस्फोटक हो जाती हैं और उलट-फेर होने लगता है, सामाजिक व्यवस्था के ढाँचे में बदलाव आने लगता है, यहाँ-वहाँ गरीबी का ख़ात्मा भी शायद होने लगता है। परंतु यदि आप इन्हीं चीजों को परमावश्यक मान लें जो आप उससे छूट जाएँगे।
Be alone, sometimes, and if you are lucky it might come to you, on a falling leaf, or from that distant solitary tree in an empty field.	कभी अकेले हो जाएँ, और यदि आप भाग्यशाली हैं तो यह आपके पास आ सकता है – गिरते हुए किसी पत्ते पर, अथवा शून्य मैदान के सुदूर एक एकाकी पेड़ से।
	(के०एफ०टी० इंगलैंड बुलेटिन १, १९६८ से अनूदित)
FEAR AND CONFUSION	**भय एवं भ्रांति**
KRISHNAMURTI; Confusion may be one of the principal causes of fear. Being confused and not finding a way out, we are afraid. Being in sorrow and incapable of ending sorrow, we say, despairingly, 'It is hopeless, it is this, it is that'. Now, is there a way out'! Let us go into it.	कृष्णमूर्तिः भय के जो प्रभुख कारण हैं उनमें से एक संभवतः भ्रांति है। हम भ्रांति में हैं और हमें इससे बाहर निकलने का कोई मार्ग नहीं मिल रहा है, अतः हम भयभीत हैं। हम दुःख में हैं और दुःख को मिटाने में हम असमर्थ हैं, इसलिए हम हताश होकर कहते हैं ‘‘जीवन निराशाजनक है, यह वैसा है।’’ तो प्रश्न यह उठता है क्या इससे निकलने का कोई मार्ग है? आइए, हम इसकी छानबीन करें।
When we say, I am confused', do we see it as a fact? You under stand what I mean? Do I realise 1 am hungry or is it that I'm told 1 am hungry? The two are entirely different. Now which is it? Do I realise I am confused or do I sense my confusion only in relation to something?	जब हम कहते हैं, ‘‘मैं भ्रमित हूँ’’, तो क्या हम इसे एक तथ्य के रूप में देख पाते हैं? क्या आप मेरा मतलब समझ रहे हैं? जब मुझे भूख लगती है तो क्या मैं स्वयं इस बात को महसूस करता हूँ कि मैं भूखा हूँ या कोई अन्य व्यक्ति मुझे इस बात की जानकारी देता है कि मैं भूखा हूँ? ये दोनों बिल्कुल भिन्न हैं। तो यह क्या है? क्या मैं अनुभव करता हूँ कि मैं भ्रमित हूँ या मुझे अपनी भ्रांति का अनुभव परोक्ष रूप से किसी चीज के साथ तुलना करने पर ही होता है?

Questioner: In relation to some state we imagine.	प्रश्नकर्ताः एक ऐसी अवस्था जो हमारी कल्पना है के साथ तुलना करने पर।
KR1SHNAMURTl: That's it. So is confusion a direct experience or only an experience to be achieved in comparison to some state which is not? Please Sirs, it is very important to discuss this. I am confused: do I realise it as J realise I am hungry, or do 1 realise it only in comparison to something which I have thought or achieved, or which I have understood as clarity? Sir, when you are hungry do you compare it with when you are not hungry? You don't; you are hungry. In the: same way, do I realise Tam confused? If you realise it, then it becomes vital, then you have to find an answer.	कृष्णमूर्तिः बिल्कुल ठीक। अतः क्या भ्रांति एक प्रत्यक्ष अनुभव की वस्तु है या एक ऐसी वस्तु जिसका अनुभव उस कल्पित अवस्था के साथ तुलना करने पर होता है जो है नहीं? कृपया इस पर सोच विचार करें, क्योंकि यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। मान लीजिए कि मैं भ्रमित हूँ अब सवाल यह है क्या मैं प्रत्यक्ष रूप से अपनी भ्रांति का अनुभव करता हूँ जैसे कि मैं अपनी भूख का अनुभव करता हूँ? या क्या मुझे अपनी भ्रांति का अनुभव किसी ऐसी चीज के साथ तुलना करने पर ही होता है जिसे मैंने सोचा है या प्राप्त किया है या जिसे मैं स्पष्ट रूप से समझ गया हूँ? जब आप भूखे होते हैं तो क्या आप इसकी तुलना उस स्थिति से करते हैं जब आप भूखे नहीं होते? आप ऐसा नहीं करते, क्योंकि आप भूखे हैं। ठीक इसी तरह क्या आप अनुभव करते है कि आप भ्रमित हैं? क्योंकि तब आपको इसका जबाव ढूँढ़ना होगा।
Questioner: Then why don't we realise it?	प्रश्नकर्ताः तब क्यों हम इसको प्रत्यक्ष रूप से अनुभव नहीं करते?
Krishnamurti : Wait, wait. First see the difference. When you realise that you are hungry, you act—beg, borrow or steal—you do something. But if you say, 'Well, I may be hungry', then you take time, talk about it, discuss what kind of food you are going to have and so on. When you realise, your action is-immediate. And that is the whole point. I am confused and I realise that any movement I make—any movement in thought or any activity initiated by thought—is still confusion. Right? Do I realise that fact? Which means that it is thought that is creating the confusion, and therefore the fear.	कृष्णमूर्तिः जरा ठहरिए। पहले आप दोनों के अंतर को देखिए। जब आप स्पष्ट रूप से अनुभव करते हैं कि आप भूखे हैं तो आप कुछ न कुछ करते हैं चाहे आप भीख मांगे, किसी से खाना उधार ले लें या चोरी करें, लेकिन आप कुछ न कुछ जरूर करते हैं। परंतु यदि आप कहते हैं, ‘‘संभव है कि मुझे भूख लगी हो,’’ तब आप कुछ करने के पहले समय लेते हैं, इसके संबंध में बाते करते हैं, क्या खाएँ, इस पर चर्चा करते हैं, इत्यादि। जब आप किसी चीज को स्पष्ट अनुभव करते हैं तो आपका कर्म तत्क्षण होता है। और यही मुख्य बात है। मैं भ्रमित हूँ और मैं महसूस करता हूँ कि कोई भी क्रिया जो मैं करता हूँ वैचारिक या विचार द्वारा प्रेरित वह भी भ्रांति ही है। क्या मैं इस तथ्य को स्पष्ट रूप से अनुभव करता हूँ? इस सब का अर्थ है कि विचार ही भ्रांति पैदा करता है और भ्रांति से भय जन्म लेता है।
Questioner: But the problem is that as soon as one hears that, one imagines a thoughtless state.	प्रश्नकर्ताः लेकिन समस्या यह है कि ज्यों ही कोई इसे सुनता है यह एक विचारशून्य अवस्था की कल्पना कर लेता है।

Krishnamurti : No Sir. You see you do not move from fact to fact; you are already far away from the fact. I am confused and I realise that whatever movement I make is still the product of confusion. When I know that, I stop; I don't invent, theorise or despair. I say, 'By Jove, I'm confused'. Then what takes place—empirically, not as a theory? What takes place when I realise I am confused and that whatever I do or think, whatever activity I hope to achieve, whatever movement I make, is the product of confusion and therefore adding more confusion —when I realise that psychologically I am confused and that psychologically any movement the psyche makes is still within the field of confusion? I stop, don't I? The movement of the psyche stops—and therefore I am not afraid because fear is part of the confusion.	कृष्णमूर्तिः नहीं, सर। कृपया इसे समझने की कोशिश करें कि आप तथ्य से तथ्य की ओर नहीं चलते; आप तो पहले से ही तथ्य से बहुत दूर हैं। मैं भ्रमित हूँ और मैं स्पष्ट अनुभव करता हूँ कि भ्रांति की इस दशा में मेरे द्वारा किया गया हर कारवाई भ्रांति की ही उपज हैं। जब मैं इसे जान जाता हूँ तो मैं रुक जाता हूँ। तब मैं किसी नयी चीज की खोज नहीं करता, अटकलबाजी नहीं करता या निराश नहीं होता। मैं इतना ही कह पाता हूँ, ‘‘अरे मैं तो भ्रमित हूँ।’’ तब क्या घटित होता है सैद्धांतिक तल पर नहीं बल्कि अनुभव के तल पर? जब मैं स्पष्ट रूप से इसे महसूस करता हूँ कि मैं भ्रमित हूँ और भ्रांति की इस दशा में मैं जो कुछ भी सोचता या करता हूँ, जिस सक्रियता को उपलब्ध करने की आशा करता हूँ यानी मैं जो कुछ भी करता हूँ वह भ्रांति की ही उपज है और इसलिए मेरी हर क्रिया वस्तुतः भ्रांति में ही वृद्धि कर रही है अर्थात् जब मैं अनुभव कर लेता हूँ कि मनोवैज्ञानिक रूप से मैं भ्रमित हूँ और मेरे मानस द्वारा किया गया कोई भी मनोवैज्ञानिक कदम भ्रांति के ही क्षेत्र में है तो मैं रुक जाता हूँ। क्या मैं ऐसा नहीं करता? मन-मस्तिष्क की हरकल रुक जाती है, और इसलिए तब मैं भयभीत नहीं रह जाता क्योंकि भय भ्रांति का ही हिस्सा है।
Now is this the case with each one of us?—otherwise we cannot discuss this matter.	क्या हममें से हर व्यक्ति की यही स्थिति है? अन्यथा हम इस विषय पर चर्चा नहीं कर सकते।
Questioner: Not for me. I'm still in a despairing state.	प्रश्नकर्ताः मेरी तो नहीं है। मैं अभी तक निराशा की स्थिति में हूँ।
Krishnamurti : I realise there is no way out, that the road doesn't lead anywhere, that is an impasse. What do I do? You dont say, 'Well I don't know what to do'. You don't stay there; you turn your back on it, don't you?	कृष्णमूर्तिः मैं महसूस करता हूँ कि कोई रास्ता नहीं है, यह रास्ता कहीं नहीं ले जा रहा है, यह रास्ता यहीं पर आकर खत्म हो रहा है। तो अब आप क्या करेंगे? आप यह तो कह नहीं सकते कि मुझे मालूम नहीं कि मैं क्या करूँ? आप वहीं पर तो रुके नहीं रहेंगे, आप पीछे लौटेंगे। क्या नहीं लौटेंगे?
Questioner: But how to realise?	प्रश्नकर्ताः लेकिन में कैसे महसूस करूँ कि बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है?
Krishnamurti : That is the question: how to realise the total confusion of man, not how to get out of it. Then you begin to find out the causes of this confusion—	कृष्णमूर्तिः असली सवाल यही हैः मनुष्य की संपूर्ण भ्रांति को कैसे महसूस किया जाय? यह असली सवाल नहीं है कि भ्रांति से बाहर मैं कैसे निकलूँ। तो अब आप सबसे पहले भ्रांति के कारणों को ढूंढ़गे क्योंकि अब आपके

because you have stopped, not because you are seeking. I don't know if you see the difference. Before I was looking for the causes of confusion in order to clear them up; therefore my looking, my examination, was entirely different from now when, because I realise I am confused, I can see that there is no activity possible. This looking is an entirely different observation.	लिए कुछ और करने को नहीं बचा है, कुछ और खोजने के लिए नहीं बचा है। पता नहीं, आप इस फर्क को देख पा रहे हैं या नहीं। पहले मैं भ्रांति को दूर करने के लिए ही उसके कारणों को देखता फिरता था और उनकी जाँच-पड़ताल करता था; और इसलिए मेरा वह देखना और जाँच-पड़ताल करना मौजूदा स्थिति से बिल्कुल ही भिन्न था। मौजूदा स्थिति में मैं इतना ही देख रहा हूँ कि मैं भ्रमित हूँ और यह भी देख रहा हूँ कि भ्रांति की इस दशा में कोई भी सार्थक गतिविधि संभव नहीं है। इस प्रकार से देखना एक बिलकुल ही भिन्न ढंग का अवलोकन है।
Questioner: One is without a motive.	प्रश्नकर्ताः इस ढंग के अवलोकन के पीछे कोई प्रयोजन नहीं है।
Krishnamurti: That's it. One is without motive, the other is with motive.	कृष्णमूर्तिः बिलकुल सही। एक अवलोकन प्रयोजन के बिना है और दूसरा अवलोकन प्रयोजन के कारण है।
Questioner: Out of confusion you see it differently because you have a motive behind it—you see what you want to, not what really is. But if you have no motive, you can see directly what is.	प्रश्नकर्ताः भ्रांति की स्थिति में सामान्यतः हम सही ढंग से इसलिए नहीं देख पाते क्योंकि उस देखने के पीछे एक प्रयोजन होता है हम वही देख लेते हैं जो हम देखना चाहते हैं न कि जो है। लेकिन यदि हमारा अवलोकन प्रयोजनहीन है तो हम प्रत्यक्ष रूप से सीधे वही देखेंगे जो है।
Krishnamurti : That's right. Please see his point, look what he has said. He says that if you have a motive, then that motive distorts, and that when you have no motive you see clearly.	कृष्णमूर्तिः सही कहा आपने। कृपया इसे देखिए, यह देखिए कि वे क्या कह रहे हैं। उनका कहना है कि जब आपका कोई प्रयोजन होता है तो वह प्रयोजन आपके अवलोकन को विकृत कर देता है और जब आपका अवलोकन प्रयोजनहीन होता है तो आप स्पष्ट रूप से देख पाते हैं।
Questioner: But how can we stop having motives?	प्रश्नकर्ताः लेकिन हम प्रयोजनों को कैसे रोक सकते हैं?
Krishnamurti : Wait, wait. You cannot stop anything but just observe. Sir, you are missing the whole point, you are too intellectual. This is a direct problem, not an intellectual problem. Any movement on my part is confusion, and that's the difficulty.	कृष्णमूर्तिः ज़रा ठहरिए। आप किसी भी चीज को नहीं रोक सकते, आप केवल उसका अवलोकन कीजिए। सर, आप असली मुद्दे से चूक रहे हैं। आप कुछ ज्यादा ही बौद्धिक हैं। यह एक प्रत्यक्ष समस्या है, कोई बौद्धिक समस्या नहीं।

Now I have realised that as long as I look with a motive, all looking is distorted. So is it possible to look without motive? It is the motive that is going to breed fear, obviously. So, a much more fundamental question is included in this: Is it possible for any action to take place without motive?	मेरी ओर से की जानेवाली कोई भी कारवाही भ्रांति हैं, और यही तो मुसीबत है। अब मैं इतना तो महसूस कर ही चुका हूँ कि जब तक मैं किसी प्रयोजन से देखता हूँ तब तक मेरे देखने में विकृति है। तो क्या बिना प्रयोजन के देखना संभव है? स्पष्टतः यह प्रयोजन ही तो भय को जन्म देने जा रहा है अतः इसमें जो एक मूलभूत प्रश्न निहित है वह यह है : क्या कोई ऐसा कर्म संभव है जो बिना किसी प्रयोजन के घटित हो?
	पेरिस, अप्रैल १९६७ में युवकों से चर्चा का अंश।
	के.एफ.टी इंगलैड बुलेटिन २२, १९७४ से अनुदित।
MEDITATION AND THE TIMELESS MOMENT	**ध्यान एवं कालातीत क्षण**
Question: What is involved in meditation?	प्रश्नकर्ताः ध्यान के साथ कौन सी बातों जुड़ी हैं?
Krishnamurti: The primary thing is to completely empty the mind of everything it has known; the second, a non-directed, non-controlled energy. Then, it also requires the highest form of order, order in the sense of a complete ending of the disorder brought about by contradiction, and a quality of mind that has no character. We must completely set aside the idea or practice of a method. The central issue is whether the mind—it includes the heart, the brain and the whole physical organism— can live without any distortion, without any compulsion and therefore without any effort. Please put the question to yourself; all this is meditation.	कृष्णमूर्तिः पहली बात है मन को पूर्णतः खाली करना, उन सभी चीजों से जिन्हें इसने अब तक जाना है; दूसरी चीज है एक अनिर्देशित और अनियंत्रित ऊर्जा। फिर ध्यान के लिए सर्वोच्च ढंग की व्यवस्था आवश्यक है – व्यवस्था यानी उस अव्यवस्था का पूर्ण रूप से अंत हो जाना जिसकी उत्पत्ति का कारण है अंतर्विरोध तथा एक ऐसी गुणवत्ता वाला मन जिसका कोई चरित्र नहीं है। हमें इस धारणा को पूरी तरह नकार देना चाहिए कि ध्यान के लिए किसी विधि या पद्धति का अभ्यास जरूरी है। मुख्य प्रश्न यह है क्या मन – मन जिसमें हृदय, मस्तिष्क और संपूर्ण भौतिक शरीर शामिल हैं – बिना किसी विकृति और दबाव यानी बिना किसी प्रयास के जी सकता है? कृपया यह प्रश्न स्वयं से कीजिए, यह सब ध्यान है।
Our minds are distorted; they have been shapedby the culture in which we live, by the religious, economic structures, by the food we eat and so on. The mind is given a definite form, it is conditioned and this conditioning is a distortion. A mind can see very clearly, purely, completely, innocently, only when there is no distortion. The first move is the capacity to look—the art of listening—to look without distortion,	हमारा मन विकृत है। हम जिस संस्कृति में जीते हैं; हमारा जो धर्म है, आर्थिक ढाँचा है तथा हम जो चीजें खाते हैं ये सभी हमारे मन को आकार देते हैं। अर्थात् इन चीजों से मन को एक विशेष स्वरूप मिल जाता है तथा वह संस्कारबद्ध हो जाता है और संस्कारबद्ध होने की यह प्रक्रिया एक विकृति है। जब कोई भी विकृति नहीं होती तभी मन बहुत स्पष्टता, शुद्धता, पूर्णता और निष्कपटता से देख सकता है। अतः पहला कदम है देखने की क्षमता हासिल करना। इस तरह देखना कि उसमें विकृति न हो, जिसका अर्थ है कि मन को पूर्णतः शांत

which means the mind must be absolutely still, without a movement. Can the mind that is in constant movement be completely and absolutely quiet, without any movement, not with any method, system, practice, control?	और स्थिर होना चाहिए बिना किसी गतिविधि के। क्या ऐसा मन जो सतत गतिविधि की दशा में है, पूर्णतः और समग्रतः शांत हो सकता है बिना किसी विधि पद्धति अभ्यास और नियंत्रण का अनुसरण करते हुए?
The mind must empty itself of all the past to become highly sensitive; and it cannot be sensitive if there is the burden of the past. It is only the mind that has understood all this that can put the question. And when it puts the question it has no answer, because there is no answer. The mind has become highly sensitive and therefore supremely intelligent and & intelligence has no answer. It is in itself the answer. The observer has no place because intelligence is supreme.	मन को अत्यंत संवेदनशील बन जाने के लिए चाहिए कि वह स्वयं को समस्त अतीत से खाली कर ले। वह तब तक संवेदनशील नहीं बन सकता जब तक वह अतीत का बोझ ढो रहा है। जो मन इस सबको समझ चुका है वही प्रश्न कर सकता है। और जब वह प्रश्न करता है तो कोई उत्तर नहीं प्राप्त होता, क्योंकि कोई उत्तर है ही नहीं। ऐसा मन परम संवेदनशील बन चुका है अतः यह अत्यंत प्रज्ञावान् है, और प्रज्ञा के पास कोई उत्तर नहीं होता। यह अपने आप में ही उत्तर है। वहाँ द्रष्टा का कोई स्थान नहीं है क्योंकि प्रज्ञा ही सर्वोच्च है।
Then the mind is no longer seeking, no longer wanting higher experiences and therefore it is not capable of control. See the beauty of it, Sir. It does not control, because it is intelligent. It is operating, it is working. Therefore in the very act of intelligence, the dual state disappears. All this is meditation. It is like a cloud that begins on a hilltop, with a few little clouds and as it moves, it covers the whole sky, the valley, the mountains, the rivers, the human beings, the earth; it covers everything. That is meditation because meditation is the concern of all the living, not just one part of it.	तब मन किसी चीज की खोज नहीं करता, गूढ़ अनुभवों की चाह नहीं करता और इसलिए यह नियंत्रण के परे है। कृपया इसके सौंदर्य को देखिए। ऐसा मन नियंत्रण नहीं करता, क्योंकि यह प्रज्ञावान् है। यह क्रियाशील है, यह कार्यरत है। प्रज्ञा के कार्य करते ही द्वैत की दशा विदा हो जाती है। यह सब ध्यान है। यह उस बादल के समान है जो पहाड़ियों की चोटी से एक छोटे टुकड़े के रूप में शुरू होकर धीरे-धीरे बढ़ते हुए पूरे आकाश को तथा घाटियों, पर्वतों और नदियों को एवं मनुष्य और पृथ्वी को आच्छादित कर लेता है; यह हर चीज को ढ़क लेता है। वह ध्यान है, क्योंकि ध्यान का संबंध समस्त जीवन से है, न कि इसके केवल एक खंड से।
Then only can the mind be absolutely still, without any movement, not for the duration of that moment, because that moment has no duration, because it is not of time. Time exists only when there is the observer who experiences that silence and says: "I wish I could have more of it." So that moment of absolute stillness, immobility, because it is not of time, has no future or past. Therefore, that absolute motionless immobility is beyond all thought. And that moment,	तभी मन पूर्ण रूप से शांत और स्थिर हो सकता है, बिना किसी गतिविधि के केवल इस क्षण की अवधि के लिए नहीं, क्योंकि उस क्षण की कोई अवधि होती ही नहीं, अर्थात् वह क्षण काल का हिस्सा नहीं है। काल का अस्तित्व तभी होगा यदि वहाँ द्रष्टा मौजूद हो जो मौन का अनुभव करे और कहे ‘‘काश मैं इसका और अधिक अनुभव कर पाता।’’ चूँकि परम अचलता और स्थिरता के उस क्षण का संबंध काल से नहीं है अतः उसका कोई भूत या भविष्य नहीं है। अतः वह परम अचल ठहराव समस्त विचार के परे है। और चूँकि वह क्षण कालातीत है अतः अनंत है।

because it is timeless, is endless.	
A mind that is free of any distortion is really the true religious mind, not a mind that goes to the temple, not a mind that reads the sacred books, not a mind that repeats rituals, however beautiful they may be, not a mind that is filled with images, imposed upon it or with self-created images.	जो मन हर प्रकार की विकृति से रहित है वही वस्तुतः सच्चा धार्मिक मन है न कि ऐसा मन जो मंदिर जाता है, जो धर्मग्रंथों का पाठ करता है, जो कर्मकांड और अनुष्ठान को दोहराता है चाहे वे कितने ही सुंदर और भव्य क्यों न हों तथा जो स्वयं पर आरोपित या स्वनिर्मित प्रतिबिंबों से भरा है।
Living is not separate from learning and in this there is great beauty. For after all, love is that. Love is compassion, passion, passion for everything. When there is love, there is no observer, there is no duality: the 'you' who love 'me' and the I who love 'you'. There is only love, though it may be loving one or the thousand; there is only love.	जीना सीखने से अलग नहीं है और इसमें है परम सौंदर्य क्योंकि आखिर यह तो प्रेम है। प्रेम का अर्थ है करुणा–यानी हर चीज के प्रति एक उत्कट आवेग से भरा होना। जहाँ प्रेम है वहाँ द्रष्टा नहीं है, द्वैत नहीं है यानी वहाँ इस तरह की स्थिति नहीं है कि आप जो मुझसे प्रेम करते हैं तथा मैं जो आपको प्रेम करता हूँ। वहाँ केवल प्रेम है यद्यपि संभव है कि यह सिर्फ एक को प्रेम कर रहा हो या हजार को, परंतु वहां केवल प्रेम है।
When there is love, then you can do no wrong, do what you will. But without love we are trying to do everything—going to the moon, the marvellous scientific discoveries—and therefore everything goes wrong. Love can only come when there is no observer. That means, when the mind is not divided in itself as the one observing and the observed, only then there is that quality of love. When you have that, that is the Supreme.	जब प्रेम है तो आप चाहे जो कुछ भी करें आपसे कोई भूल हो ही नहीं सकती। परंतु हम प्रेम के बिना ही हर चीज करने की कोशिश कर रहे हैं – चाँद पर जाना, अद्‌भुत वैज्ञानिक खोज करना आदि – और इसलिए हर चीज कहीं न कहीं जाकर गलत हो जाती है। प्रेम तभी आता है जब द्रष्टा न रह जाए। इसका अर्थ है कि जब मन अपने आपमें द्रष्टा और दृश्य के रूप में विभाजित नहीं होता तभी वहां प्रेम की गुणवत्ता प्रकट होती है। जब वह है, सो ही चरम है।
Excerpt from a discussion held in New Delhi, 1956.	नयी दिल्ली, १९५६ में हुए विचार विमर्श का अंश।
	के.एफ.टी. इंगलैंड बुलेटिन ३५, १९७८ से अनूदित
	बीते हुए हर कल के प्रति मरना
Death is only for those who have, and for those who have a resting place. Life is a movement in relationship, and attachment, the denial of this movement, is death. Have no shelter outwardly or inwardly; have a room, or a house, or a family, but don't let it become a hiding-place, an escape from	मृत्यु केवल उन्हीं लोगों के लिए है जिनके पास कुछ है, तथा उन लोगों के लिए जिनके पास कोई ठौर–ठिकाना है। जीवन का अर्थ है परस्पर संबंध एवं आसक्ति में एक गति और इस गति का निषेध ही मृत्यु है। बाह्य या आंतरिक रूप से किसी आश्रय की खोज न करें। आपके पास सिर्फ एक कमरा हो या मकान या परिवार, लेकिन इस बात का ख्याल रखें कि यह छिपने की जगह, अपने

yourself.	आप से पलाकरने का साधन न बन जाए।
The safe harbour which your mind has made in cultivating virtue, in the superstition of belief, in cunning capacity or in activity, will inevitably bring death. You can't escape from death if you belong to this world, to the society of which you are. The man who died next door or a thousand miles away is you. He has been preparing for years with great care to die, like you. Like you he called living a strife, a misery, or a jolly good show. But death is always there watching, waiting. But the one who dies each day is beyond death.	सदाचार के अभ्यास में, अंध-विश्वासों में, छल-प्रपंच में आपके मन ने जो सुरक्षित आश्रय बनाया है, वह मृत्यु ही है। अगर आप इसी संसार या समाज के हैं, तो आप मृत्यु से बच नहीं सकते। वह आदमी जो आपके पड़ोस में मरा या आपसे एक हजार मील दूर -- वह आप ही हैं। आप ही की तरह वह बहुत वर्षो से जतन से मरने की तैयारी कर रहा था। आप ही की तरह वह कहता था कि जीवन संघर्ष है, दुख है या एक अच्छा-खासा तमाशा। किन्तु मृत्यु सदा मौजूद है आपकी राह देखते हुए। लेकिन जो व्यक्ति प्रत्येक दिन मरता है वह मृत्यु के परे है।
To die is to love. The beauty of love is not in past remembrances or in the images of tomorrow. Love has no past and no future; what has, is memory, which is not love. Love with its passion is just beyond the range of society, which is you. Die, and it is there.	मरने का अर्थ है प्रेम करना। प्रेम का सौन्दर्य अतीत की स्मृतियों में नहीं है और न ही भविष्य के प्रतिबिंबों में। प्रेम का न कोई अतीत है और न भविष्य। जो है वह सिर्फ स्मृति है, और वह प्रेम नहीं है। प्रेम और इससे जुड़ा उत्कट आवेग समाज के दायरे से परे हैं - समाज यानी आप। मर कर तो देखिए, यह वहीं है।
Meditation is a movement in and of the unknown. You are not there, only the movement. You are too petty or too great for this movement. It has nothing behind it or in front of it. It is that energy which thought-matter cannot touch. Thought is perversion for it is the product of yesterday; it is caught in the toils of centuries and so is confused, unclear. Do what you will, the known cannot reach out for the unknown. Meditation is the dying to the known.	ध्यान अज्ञात में, अज्ञात का स्पंद है। आप वहाँ नहीं होते, केवल वह स्पंद होता है। इस स्पंद के लेखे आप अत्यंत छोटे पड़ जाते हैं या कुछ ज्यादा ही बड़े। न इसके पीछे कुछ है और न आगे। यह वह ऊर्जा है जिसका स्पर्श स्थूल पदार्थ-विचार नहीं कर सकता। विचार तो एक विकृति है क्योंकि वह बीते हुए कल की उपज है। विचार सदियों पुराने जाल में फँसा है और इसलिए वह भ्रमित एवं अस्पष्ट है। आप जो चाहें करें परंतु ज्ञात कभी अज्ञात के पास फटक भी नहीं सकता। ध्यान है ज्ञात के प्रति मर जाना।
Out of silence look and listen. Silence is pot the ending of noise; the incessant clamour of the mind and heart does not end in silence; it is not a product, a result of desire, nor is it put together by will. The whole of consciousness is a restless, noisy movement within the	मौन से ही देखिए और सुनिए। मौन शोर का अंत नहीं है। मन और हृदय के अनवरत कोलाहल का अंत मौन में नहीं होता है। मौन आकांक्षा की उपज, परिणाम नहीं है, और न ही इसका निर्माण इच्छाशक्ति के द्वारा हुआ है। समूची चेतना, अपनी ही बनायी सीमाओं में एक अशांत और कोलाहलपूर्ण गति है। इस सीमाओं के भीतर मौन या निश्चलता बकबक का सिर्फ अस्थायी अंत है; यह वह

borders of its own making. Within this border silence or stillness is but the momentary ending of the chatter; it is the silence touched by time. Time is memory and to it silence is short or long; it can measure, give to it space and continuity, and then it becomes another toy. But this is not silence. Everything put together by thought is within the area of noise, and thought in no way can make itself still. It can build an image of silence and conform to it, worshipping it, as it does with so many other images it has made, but its formula of silence is the very negation of it; its symbols are the very denial of reality. Thought itself must be still for silence to be. Silence is alway now, as thought is not. Thought, always being old, cannot possibly enter into that silence which is always new. The new becomes the old when thought touches it. Out of this silence, look and talk. The true anonymity is out of this silence and there is no other humility. The vain are always vain though they put on the garment of humility which makes them harsh and brittle. But out of this silence the word love has a wholly different meaning. This silence is not out there but it is where the noise of the total observer is not.	मौन है जो समय द्वारा स्पर्शित है। समय स्मृति है और इसके लेखे मौन अल्प या दीर्घ है, इसे मापा जा सकता है। यदि इसे अंतराल और सातत्य दे दिया जाए तो यह एक और खिलौना बन जाएगा। लेकिन इसे मौन नहीं कह सकते। विचार द्वारा जो कुछ भी निर्मित है वह शोर की ही सीमा में है और विचार स्वयं को किसी भी तरह शांत और निश्चल नहीं कर सकता। यह मौन की प्रतिमा निर्मित कर सकता है और इसका अनुसरण कर सकता है, इसकी पूजा कर सकता है, जैसा व्यवहार यह स्वनिर्मित अन्य सभी प्रतिमाओं के साथ करता है परंतु इसने मौन का जो फॉर्मूला यानी सूत्र बना रखा है वह वस्तुतः मौन का निषेध है और इसके द्वारा निर्मित जो प्रतीत हैं वे यथार्थ को नकारते हैं। स्वयं विचार को निश्चल हो जाना चाहिए ताकि मौन का जन्म हो सके। मौन का संबंध वर्तमान से है जबकि विचार का नहीं है। विचार सदा पुराना है अतः यह संभवतः उस मौन में प्रवेश नहीं कर सकता जो सदा नया है। जैसे ही विचार उसे छूता है नया पुराना बन जाता है। तो आप इस मौन से ही देखिए और बोलिए। सच्चा अनामत्व इसी मौन की उपज है और इसके अतिरिक्त कोई अन्य विनम्रता नहीं है। अहंकारी लोग सदा अहंकारी हैं, हालाँकि वे विनम्रता का आवरण ओढ़े रहते हैं जो उन्हें कठोर और रूखा बना देता है। लेकिन जब प्रेम मौन से जन्म लेता है तो इस प्रेम शब्द का एक बिल्कुल ही भिन्न अर्थ होता है। यह मौन कहीं दूर की वस्तु नहीं है बल्कि यह वहीं है जहां समग्र द्रष्टा का शोर नहीं है।
Innocency alone can be passionate. The innocent have no sorrow, no suffering, though they have had a thousand experiences. It is not the experiences that corrupt the mind but what they leave behind, the residue, the scars, the memories. These accumulate, pile up one on top of the other, and then sorrow begins. This sorrow is time. Where time is, innocency is not. Passion is not born of sorrow. Sorrow is experience, the experience of everyday life, the life of agony and fleeting pleasures, fears and certainties. You cannot escape from experiences but they need not take root	निष्कपटता ही उत्कटतापूर्ण हो सकती है। निष्कपट को कोई दुःख दर्द नहीं होता, यद्यपि वह हजारों अनुभवों से गुजर चुका होता है। अनुभव ऐसी चीज नहीं है जो मन को भ्रष्ट कर सके। जो चीज मन को भ्रष्ट करती है वह है हर अनुभव के पीछे छूट गये निशान और स्मृतियाँ। ये इकट्ठे होते चले जाते हैं, एक के ऊपर दूसरा जमा होता चला जाता है, और तब दुःख का आरंभ हो जाता है। यह दुःख समय है। और जहाँ समय है वहाँ निष्कपटता नहीं होती। उत्कट आवेग का जन्म दुःख से नहीं होता। दुःख अनुभव है, दैनिक जीवन का अनुभव, उस जीवन का अनुभव जिसमें शोक-संताप है, क्षणिक सुख है, भय हैं तथा निश्चितता-अनिश्चितता है। आप अनुभवों से तो बच नहीं सकते परंतु इसकी कोई जरूरत नहीं कि वे अनुभव चित्त भूमि में जड़ जमा लें। इन्हीं जड़ों से उत्पन्न होते हैं

in the soil of the mind. These roots give rise to problems, conflicts and constant struggle. There is no way out of this but to die each day to every yesterday. The clear mind alone can be passionate. Without passion you cannot see the breeze among the leaves or the sunlight on the water. Without passion there is no love.	द्वंद्व, समस्याएँ एवं सतत संघर्ष। इससे बाहर निकलने का केवल एक मार्ग है और वह है बीते हुए हर कल के प्रति हर रोज मर जाना। जो मन खुला और साफ है वहीं उत्कट आवेग से भरा हो सकता है। इस उत्कट आवेग के बिना आप पेड़ के पत्तों से होकर बहने वाली हवा को नहीं देख सकते और न ही जल की सतह पर थिरकने वाली सूर्य किरणों को। इस उत्कट आवेग के बिना प्रेम कहाँ!
Seeing is the doing. The interval between seeing and doing is the waste of energy.	देखना ही करना है। देखने और करने के बीच जो अंतराल है वह ऊर्जा का अपव्यय है।
Love can only be when thought is still. This stillness can in no way be manufactured by thought. Thought can only put together images, formulas, ideas, but this stillness can never be touched by thought. Thought is always old, but love is not.	प्रेम तभी जन्म ले सकता है जब विचार निश्चल हो जाए। यह निश्चलता किसी भी तरह विचार द्वारा उत्पन्न नहीं की जा सकती। विचार केवल प्रतिबिंबों, सूत्रों और सिंद्धांतों का निर्माण कर सकता है, परंतु इस निश्चलता का स्पर्श विचार कभी नहीं कर सकता। विचार सदा पुराना है, प्रेम नहीं।
The physical organism has its own intelligence which is made dull through habits of pleasure. These habits destroy the sensitivity of the organism and this lack of sensitivity makes the mind dull. Such a mind may be alert in a narrow and limited direction and yet be insensitive. The depth of such a mind is measurable and is caught by images and illusions. Its very superficiality is its only brightness. A light and intelligent organism is necessary for meditation. The interrelationship between the meditative mind and its organism is a constant adjustment in sensitivity; for meditation needs freedom. Freedom is its own discipline. In freedom alone can there be attention. To be aware of inattention is to be attentive. Complete! attention is love. It alone can see, and the seeing is the doing.	भौतिक शरीर की अपनी प्रज्ञा होती है, जो सुखोपभोग की आदतों द्वारा मंद हो जाती है। ये आदतें शरीर की संवेदनशीलता को नष्ट कर डालती है, और संवेदनशीलता का यह अभाव मन को मंद बना देता है। ऐसा मन एक संकुचित और सीमित दिशा में सचेत हो सकता है और फिर भी संभव है कि वह असंवेदनशील हो। ऐसे मन की गहराई मापी जा सकती है, और यह बिंबों और भ्रांतियों में उलझा हुआ है, इसका सतहीपन ही इसकी एकमात्र चमक है। ध्यान के लिए एक ऐसी शरीर–रचना आवश्यक है जो हल्की और प्रज्ञावान् हो। ध्यानस्थ मन ओर इसके भौतिक शरीर के बीच जो परस्पर अंतरसंबंध है वह वस्तुतः संवेदनशीलता की ही दिशा में सतत सामंजस्य की एक प्रक्रिया है, क्योंकि स्वतंत्रता ध्यान के लिए आवश्यक है। स्वतंत्रता का एक अपना अनुशासन है। स्वतंत्रता की दशा में ही अवधान संभव है। अनवधान के प्रति सजग होना अवधानपूर्ण होना है। पूर्ण अवधान प्रेम है। वही देखता है, और देखना ही करना है।
Desire and pleasure end in sorrow; and	आकांक्षा और सुख का अंत दुःख में होता है, और प्रेम

love has no sorrow. What has sorrow is thought—thought which gives continuity to pleasure. Thought nourishes pleasure, giving strength to it. Thought is everlastingly seeking pleasure, and so inviting pain. The virtue which thought cultivates is the way of pleasure and in it there is effort and achievement. The flowering of goodness is not in the soil of thought but in freedom from sorrow. The ending of sorrow is love.	के लेखे कोई दुःख नहीं है। विचार दुःख है, विचार जो सुचा को सातत्य देता है। विचार सुख का पोषण कर उसे सबल बनाता है। विचार अनवरत रूप से सुख की खोज करता है और इसी क्रम में दुःख को न्योतता है। जिस सद्गुण का विकास विचार द्वारा किया जाता है वह सुख का ही मार्ग है और इसमें निहित है प्रयास एवं उपलब्धि। अच्छाई के फूल विचार की मिट्टी में नहीं खिलते, बल्कि दुःख से मुक्ति में ही उनका खिलना होता है। दुःख का अंत प्रेम है।
FROM THE NOTEBOOK OF KRISHNAMURTI, 1969	के.एफ.टी. इंगलैंड ४, १९६९।
What is a religious mind	**धार्मिक मन कैसा होता है?**
This is the last talk of this gathering. During these talks we have covered a great many subjects, and I think we should consider this morning what is a religious mind. I would like to go into it fairly deeply because I feel only such a mind can resolve all our problems, not only the political and economic problems, but the much more fundamental problems of human existence. Before we go into it, I think we should repeat what we have already said: that a serious mind is a mind that is willing to go to the very root of things and discover what is true and what is false in it, that does not stop half-way and does not allow itself to be distracted by any other consideration. I hope this gathering has shown sufficiently that there are at least a few who are capable and earnest enough to do this.	मैं सोचता हूँ कि आज सुबह हम विचार करें कि धार्मिक मन कैसा होता है। मैं इस विषय की गहराई में जाकर छानबीन करना चाहता हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि धार्मिक मन ही हमारी सभी समस्याओं का समाधान कर सकता है – केवल राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं का ही समाधान नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की कहीं अधिक मूलभूत समस्याओं का भी। इस विषय की छानबीन शुरू करने के पहले आज मैं पुनः इस बात को दोहरा दूँ कि गंभीर मन ऐसा मन है जो किसी भी चीज की जड़ तक पहुँच कर यह पता लगाने के लिए इच्छुक है कि सच क्या है और झूठ क्या है। ऐसा मन आधे रास्ते तक जाकर ही नहीं रुक जाता और किसी अन्य वैचारिक दुविधा में पड़कर अपने मार्ग से नहीं भटकता। मैं आशा करता हूँ कि कम से कम कुछ व्यक्ति ऐसे जरूर हैं जो ऐसा करने में सक्षम हैं और ऐसा करने के लिए तत्पर भी।
I think we are all very familiar with the present world situation, and we do not need to be told of the deceptions, the corruption, the social and economic inequalities, the menace of wars, the constant threat of the East against the West, and so on. To understand all this	मैं समझता हूँ कि हमलोग विश्व की मौजूदा स्थिति से अवगत हैं और हमें यह बतलाये जाने की जरूरत नहीं है कि चारों ओर छलप्रचंड, भ्रष्टाचार, सामाजिक और आर्थिक विषमताएँ, युद्धों का संकट तथा निरंतर अनेक तरह के खतरे मौजूद हैं। इस सारी अस्तव्यस्तता को समझने तथा स्पष्टता लाने के लिए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि मनुष्य के मानस में ही एक आमूल परिवर्तन

confusion and bring about clarity, it seems to me that there must be a radical change in the mind itself and not just patchwork reform or a mere adjustment. To wade through all this confusion, which is not only outside us but within us, to grapple with all the mounting tensions and the increasing demands, one needs a radical revolution in the psyche itself, one needs to have an entirely different mind.	घटित हो, न कि केवल हमारे बाह्य परिवेश में कोई कामचलाऊ सुधार या सामंजस्य लाया जाए। यह सारी अस्तव्यस्तता, जो केवल हमारे बाहर ही नहीं है बल्कि हमारे भीतर भी है इससे निकल कर बाहर आने के लिए अर्थात् हमारे जीवन में निरंतर बढ़ते हुए तनावों एवं चुनैतियों का सामना करने के लिए यह आवश्यक है कि संपूर्ण मनोरचना में एक आमूल क्रांति घटित हो, मानस बिलकुल ही भिन्न प्रकार का हो।
For me, revolution is synonymous with religion. I do not mean by the word `revolution' the immediate economic or social changes, but I mean a revolution in consciousness itself. All other forms of revolution, whether Communist, Capitalist or what you will, are merely reactionary. A revolution in the mind, which means the complete destruction of what has been so that the mind is capable of seeing what is true without distortion, without illusion - that is the way of religion. I think the real, the true religious mind does exist, can exist.	मेरी दृष्टि में क्रांति और धर्म एक-दूसरे के पर्याय हैं। 'क्रांति' शब्द से मेरा अभिप्राय तात्कालिक आर्थिक या सामाजिक परिवर्तन नहीं है, मेरा अभिप्राय है चेतना में ही क्रांति। अन्य प्रकार की जितनी भी क्रांतियाँ हैं – चाहे वे समाजवादी, पूँजीवादी या कोई और – केवल प्रतिक्रियावादी हैं। हमारे संपूर्ण मानस में एक क्रांति, जिसका अर्थ है समस्त अतीत का नाश हो जाना ताकि हमारा मन बिना किसी विकृति और भ्रांति के उस चीज़ को देख पाये जो सत्य है – यही है मार्ग धर्म का। मेरे ख्याल से एक वास्तविक और सच्चे धार्मिक मन का अस्तित्व होता है, हो सकता है।
I think if one has gone into it very deeply one can discover such a mind for oneself. A mind that has broken down, destroyed all the barriers, all the lies which society, religion, dogma, belief have imposed upon it, and gone beyond to discover what is true, is the true religious mind.	मुझे लगता है कि यदि कोई व्यक्ति इन सब बातों की गहराई में गया है तो वह अपने लिए ऐसे मन की खोज कर सकता है। समाज, धर्म, अंधविश्वास आदि मन के ऊपर जिन झूठी बातों को तथा बाधाओं को लाद देते हैं उन्हें तोड़ कर जो मन उनके पार जाता है और पता लगाता है कि सत्य क्या है वही सच्चा धार्मिक मन है।
So first let us go into the question of experience. Our brains are the result of the experience of centuries; the brain is the storehouse of memory. Without that memory, without the accumulated experience; and knowledge, we should not be able to function at all as human beings. Experience, memory, is obviously necessary at a certain level. But I think it is also fairly obvious that all experience based on the conditioning of knowledge, of memory, is bound to be limited. And therefore experience is not a factor in liberation. I do not know	पहले हम अनुभव के प्रश्न की छानबीन करें। हमारा मस्तिष्क सदियों के अनुभव का परिणाम है। मस्तिष्क स्मृति का भंडार है। इस स्मृति के बिना अर्थात् इस संचित अनुभव और ज्ञान के बिना हम मनुष्य के रूप में बिलकुल ही कार्य नहीं कर पायेंगे। अनुभव यानी स्मृति स्पष्टतः किसी तल पर आवश्यक है, लेकिन यह भी बिलकुल स्पष्ट है कि ज्ञान के संस्कार एवं स्मृति का आधारित समस्त अनुभव अवश्यंभावी रूप से सीमित है। इसलिए मुक्ति के मार्ग में अनुभव सहायक नहीं है। मुझे नहीं मालूम कि आपने कभी इस पर जरा भी सोचा है।

if you have thought about this at all.	
Every experience is conditioned by the past experience. So there is no new experience, it is always coloured by the past. In the very process of experiencing, there is the distortion which comes into being from the past, the past being knowledge, memory, the various accumulated experiences, not only of the individual but also of the race, the community. Now, is it possible to deny all that experience?	प्रत्येक अनुभव अतीत के अनुभवों द्वारा संस्कारित होता है। अतः कोई भी अनुभव नया नहीं है, क्योंकि हर अनुभव पर अतीत का रंग चढ़ा है। किसी भी चीज को अनुभव करने की जो प्रक्रिया है उसमें अतीत जनित विकृति स्वतः आ जाती है – अतीत अर्थात् ज्ञान, स्मृति एवं विभिन्न प्रकार के संचित अनुभव, न केवल व्यक्ति के बल्कि जाति और समुदाय के भी। अब सवाल यह उठता है क्या यह संभव है कि इस समस्त अनुभव को अस्वीकार कर दिया जाए?
I do not know if you have gone into the question of denial, what it means to deny something. It means the capacity to deny the authority of knowledge, to deny the authority of experience, to deny the authority of memory, to deny the priests, the church, everything that has been imposed on the psyche. There are only two means of denial for most of us - either through knowledge or through reaction. You deny the authority of the priest, the church, the written word, the book, either because you have studied, enquired, accumulated other knowledge, or because you do not like it, you react against it. Whereas true denial implies, does it not?, that you deny without knowing what is going to happen, without any future hope. To say, `I do not know what is true, but this is false' is, surely, the only true denial, because that denial is not out of calculated knowledge, not out of reaction. After all, if you know what your denial is leading to, then it is merely an exchange, a thing of the market place; and therefore it is not true denial at all.	मुझे मालूम नहीं कि आपने अस्वीकार के प्रश्न की छानबीन की है कि किसी चीज को अस्वीकार कर देने का क्या अर्थ है। उदाहरण के तौर पर ज्ञान के प्रभुत्व को अस्वीकार कर देना, अनुभव के प्रभुत्व को अस्वीकार कर देना, स्मृति के प्रभुत्व को अस्वीकार कर देना एवं पंडित पुरोहित, मंदिर तथा उस प्रत्येक चीज को अस्वीकार कर देना जो हमारे मानस पर जबरन लाद दी गयी है। हममें से अधिकांश लोगों के लिए अस्वीकार करने के दो ही उपाय हैं : एक तो ज्ञान के द्वारा और दूसरा प्रतिक्रिया के द्वारा। चूँकि आपने अध्ययन किया है चिंतन–मनन किया है तथा विभिन्न प्रकार का ज्ञान अर्जित किया है अतः आप पंडित, मंदिर, लिखित शब्द एवं धर्मग्रंथ के प्रभुत्व को अस्वीकार कर देते हैं अथवा चूँकि आप इन चीजों को पसंद नहीं करते अतः आप इनके विरुद्ध प्रतिक्रिया करते हैं। जबकि सच्ची अस्वीकृति का अर्थ है कि आप बिना यह जानते हुए अस्वीकार कर दें कि इसका क्या परिणाम होगा अर्थात् आप भविष्य की बिना किसी आशा और अपेक्षा के अस्वीकार कर दें। यह कहना कि मैं नहीं जानता कि सच क्या है परंतु मैं इतना ही जानता हूँ कि अमुक चीज झूठ है यही वस्तुतः एकमात्र सच्ची अस्वीकृति है क्योंकि यह अस्वीकृति किसी संचित ज्ञान या सुविचारित प्रतिक्रिया का परिणाम नहीं है। यदि आपको पहले से ही पता हो कि आपकी अस्वीकृति कौन सा परिणाम लायेगी तब तो यह लेन–देन का ही एक सौदा हुआ यानी एक बाजारू चीज और इसलिए यह निश्चित ही सच्ची अस्वीकृति नहीं है।
I think one has to understand this a little, to go into it rather deeply, because I want to find out, through denial, what is the religious mind. I feel that through negation one can find out what is true. You cannot find out what is true by	मेरे विचार से हमें इस विषय में गहराई में जाकर इसे थोड़ा समझना होगा, क्योंकि अस्वीकार के माध्यम से मैं यह पता लगाना चाहता हूँ कि धार्मिक मन कैसे होता है। मुझे लगता है कि निषेध के द्वारा हम पता लगा सकते है कि सत्य क्या है। कोई निश्चित पक्ष लेकर आप सत्य का पता नहीं लगा सकते। इससे पहले कि आप सत्य को

assertion. You must sweep the slate completely clean of the known before you can find out.	खोजें यह जरूरी है कि आप अपने स्लेट को धो-पोंछकर बिलकुल साफ कर लें ताकि उस पर ज्ञात का यानी अतीत का कोई दाग़-धब्बा न बचे।
So we are going to enquire what the religious mind is through denial, that is, through negation, through negative thinking. And obviously there is no negative enquiry if denial is based on knowledge, on reaction. I hope this is fairly clear. If I deny the authority of the priest, of the book or of tradition, because I do not like it, that is just a reaction because I then substitute something else for what I have denied; and if I deny because I have sufficient knowledge, facts, information and so on, then my knowledge becomes my refuge. But there is a denial which is not the outcome of reaction or knowledge, but which comes from observation, from seeing a thing as it is, the fact of it; and that is true denial because it leaves the mind cleansed of all assumptions, all illusions, authorities, desires.	अतः धार्मिक मन कैसा होता है, इस प्रश्न की छानबीन हम अस्वीकृति के द्वारा करने जा रहे हैं अर्थात् निषेध के द्वारा -- निषेधात्मक चिन्तन के द्वारा। इतना तो स्पष्ट ही है कि यदि यह निषेध ज्ञान या प्रतिक्रिया पर आधारित है तो निषेधात्मक जाँच-पड़ताल संभव नहीं है। मैं आशा करता हूँ कि यह बात बिल्कुल स्पष्ट है। यदि मैं इसलिए पंडित के, धर्मग्रंथ के या परंपरा के प्रभुत्व को अस्वीकार करता हूँ क्योंकि वे मुझे पसंद नहीं है तो मेरा अस्वीकार करना केवल एक प्रतिक्रिया है क्योंकि मैंने जिन चीजों को अस्वीकार किया है उनके स्थान पर तब मैं किसी और चीज को स्वीकार कर लूँगा। और यदि मैं इसलिए अस्वीकार करता हूँ क्योंकि मेरे पास तथ्यों की पर्याप्त जानकारी और ज्ञान है तो मेरा ज्ञान ही मेरा आश्रय बन जाता है। परंतु एक ऐसी अस्वीकृति भी है जो प्रतिक्रिया या ज्ञान का परिणाम नहीं है, बल्कि जो अवलोकन से आती है - अवलोकन यानी किसी चीज को तथ्यात्मक ढंग से उसी रूप में देखना जैसी वह है। इस प्रकार की अस्वीकृति ही सच्ची अस्वीकृति है क्योंकि यह मन को समस्त मान्यताओं, समस्त भ्रांतियों, अधिकारों एवं इच्छाओं से मुक्त कर देती है।
So is it possible to deny authority? I don't mean the authority of the policeman, the law of the country, and all that; that is silly and immature and will end us up in jail. But I mean the saying of the authority imposed by society on the psyche, on the consciousness, deep down; to deny the authority of all experience, all knowledge, so that the mind is in a state of not knowing what will be, but only knowing what is not true.	तो क्या यह संभव है कि हम समस्त प्रभुत्व एवं सत्ता को अस्वीकार कर दें? सत्ता से मेरा तात्पर्य यहाँ पुलिस की सत्ता या कानून इत्यादि की सत्ता नहीं है। इस प्रकार की सत्ता को अस्वीकार करना मूर्खता और अपरिपक्वता का ही काम होगा, जो हमें जेल में ले जा सकता है। मेरा मतलब उस सत्ता को अस्वीकार करने से है जो गहराई पूर्वक हमारे मानस और चेतना पर समाज द्वारा आरोपित की गयी है तथा मेरा मतलब समस्त ज्ञान की सत्ता को भी अस्वीकार करने से है, ताकि मन एक ऐसी स्थिति में आ जाए जहाँ वह यह न जान पाए कि क्या होगा, बल्कि वह इतना ही जानता हो कि क्या सच नहीं है।
You know, if you have gone into it so far, it gives you an astonishing sense of integration, of not being torn between conflicting, contradictory desires; seeing what is true, what is false, or seeing the true in the false, gives you a sense of real perception, a clarity. The mind is then in a position - having destroyed all the securities, the fears,	तो आप देख सकते हैं कि यदि आपने इस विषय की यहाँ तक छानबीन की है तो यह आपको एकीकरण का एक अद्‌भुत बोध देता है। द्वंद्वात्मक और परस्पर विरोधी इच्छाओं के बीच विभाजित न होना, क्या सत्य है, क्या असत्य है यह देखना, असत्य में सत्य को देखना आपको एक प्रत्यक्ष दर्शन एवं स्पष्टता का बोध देता है। चूँकि मन ने समस्त सुरक्षा, भय, महत्वाकांक्षा, अभिमान, अलौकिक अनुभव, उद्देश्य इत्यादि को समाप्त कर डाला है, अतः अब वह एक ऐसी स्थिति में है जहाँ वह पूर्णतः एकाकी

the ambitions, vanities, visions, purposes, everything - in a state that is completely alone, uninfluenced.	और अप्रभावित है।
Surely, to find reality, to find God or whatever name you like to give it, the mind must be alone, uninfluenced, because then such a mind is a pure mind; and a pure mind can proceed. When there is the complete destruction of all the things which it has created within itself as security, as hope and as, the resistance against hope, which is, despair, and so on, then there comes, surely, a fearless state in which there is no death. A mind that is alone is completely living, and in that living there is a dying every minute; and therefore for that mind there is no death. It is really extraordinary, if you have gone into that thing; you discover for yourself that there is no such thing as death. There is only that state of pure austerity of the mind which is alone.	इतना तो निश्चित है कि यथार्थता, 'परमात्मा' या आप इसे चाहे जो नाम दें, को पाने के लिए मन को एकाकी और अप्रभावित होना चाहिए, क्योंकि तब ऐसा मन एक शुद्ध मन होता है, और एक शुद्ध मन ही आगे बढ़ सकता है। मन जो अपने भीतर सुरक्षा, आशा, आशा के विरोध में निराशा आदि क रूप में जिन चीजों का निर्माण किया है उन सभी का जब संपूर्ण नाश हो जाता है तब निश्चय ही एक निर्भर अवस्था आती है जिसमें कोई मृत्यु नहीं है। जो मन एकाकी है वह समग्र रूप से जी रहा है, और उस जीने में ही छिपा है प्रति पल मरना, और इसलिए ऐसे मन के लिए कोई मुत्यु नहीं है। यह सचमुच एक असाधारण चीज है। यदि आप इस चीज की गहराई में जाएँ तो आपको स्वयं पता चलेगा कि मृत्यु जैसी कोई चीज नहीं होती। केवल मन की एक शुद्ध संयमित अवस्था होती है ऐसे मन की जो एकाकी है।
This aloneness is not isolation; it is. not escape into some ivory tower; it is not loneliness. All that has been left behind, forgotten, dissipated and destroyed. So such a mind knows what destruction is; and we must know destruction, otherwise we cannot find anything new. And how frightened we are to destroy everything we have accumulated!	यह एकाकीपन अलगाव नहीं है; यह किसी एकान्त में पलायन नहीं है यह अकेलापन भी नहीं है। वह सब पीछे छोड़ा जा चुका है, मिटाया जा चुका है तथा नष्ट किया जा चुका है। अतः ऐसा मन जानता है कि विनाश क्या है और हमें विनाश को जानना चाहिए अन्यथा हम किसी नवीन चीज को नहीं पा सकते। परंतु सच्चाई यह है कि हमने जिन चीजों का संग्रह रखा है उन्हें नष्ट करने से हम बहुत घबराते हैं।
There is a Sanskrit saying: `Ideas are the children of barren women'. And I think most of us indulge in ideas. You may be treating the talks we have been having as an exchange of ideas, as a process of accepting new ideas and discarding old ones, or as a process of denying new ideas and holding on to the old. We are not dealing with ideas at all. We are dealing with facts. And when one is concerned with facts, there is no adjustment; you either accept it or you deny it. You can either say `I do, not like those ideas, I prefer the old	संस्कृत में एक कहावत है ''विकल्प वंध्यापुत्र है।'' मुझे लगता है कि हममें से अधिकांश लोग विकल्पों में लिप्त रहते हैं। ये जो वार्ताएँ हो रही है उन्हें आप लोग विकल्प के आदान-प्रदान के रूप में ले रहे होंगे अर्थात् एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में जिसमें नये विकल्पों को ग्रहण करना तथा पुरानो को त्याग देना है, अथवा, एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में जिसमें नये विकल्पों को नकार देना तथा पुरानों से लिपटे रहना है। यहाँ हमारा सरोकार विकल्पों से बिल्कुल ही नहीं है। हमारा सरोकार तथ्य से है। और जब आपका सरोकार तथ्य से होता है तो वहाँ किसी तरह का समझौता नहीं होता; आप या तो उसे स्वीकार कर लेते हैं या उसे अस्वीकार कर देते हैं। आप कह सकते हैं, ''मैं

ones, I am going to live in my own stew', or, you can go along with the fact. You cannot compromise, you cannot adjust. Destruction is not adjustment. To adjust, to say, `I must be less ambitious, not so envious', is not destruction. And one must, surely, see the truth that ambition, envy, is ugly, stupid, and one must destroy all these absurdities. Love never adjusts. It is only desire, fear, hope, that adjusts. That is why love is a destructive thing, because it refuses to adapt itself or conform to a pattern.	इन नये विकल्पों को नहीं पसंद करता, मुझे तो पुराने ही अधिक प्रिय हैं, मैं तो अपनी ही दुनिया में रहने जा रहा हूँ'' अथवा आप तथ्य के साथ-साथ चल सकते हैं। आप समझौता नहीं कर सकते, आप सामंजस्य नहीं बैठा सकते। विनाश का अर्थ सामंजस्य नहीं है। ताल-मेल बैठाना, यह कहना ''मुझे कम महत्वाकांक्षी होना चाहिए, इतना ईर्ष्यालु नहीं होना चाहिए'' यह वस्तुतः नाश नहीं है। और आपको निश्चित रूप से इस सत्य को देखना चाहिए कि महत्वाकांक्षा और ईर्ष्या वस्तुतः कुरूप तथा मूर्खतापूर्ण हैं, और यह आवश्यक है कि इन सारी बेतुकी बातों को आप नष्ट कर दें। प्रेम कभी समझौता नहीं करता। जो चीजें समझौता करती हैं वे है इच्छा, भय, आशा इत्यादि। अतः प्रेम एक विनाशकारी चीज है क्योंकि प्रेम किसी बँधे-बँधाये ढाँचे के अनुकूल स्वयं को नहीं बनाता या उस ढाँचे का अनुसरण नहीं करता।
So, we begin to discover that when there is the destruction of all the authority which man has created for himself in his desire to be secure inwardly, then there is creation. Destruction is creation.	तो अब हमें यह पता लगा रहा है कि मनुष्य ने आंतरिक रूप से सुरक्षित होने की अपनी चाह के क्रम में जिस प्रभुत्व और सत्ता का निर्माण अपने लिए किया है उस सबका जब विनाश हो जाता है तो सृजन होता है। वस्तुतः विनाश ही सृजन है।
Then, if you have abandoned ideas, and are not adjusting yourself to your own pattern of existence or a new pattern which you think the speaker is creating - if you have gone that far - , you will find that the brain can and-must function only with regard to outward things, respond only to outward demands; therefore the brain becomes completely quiet. This means that the authority of its experiences has come to an end, and therefore it is incapable of creating illusion. And to find out what is true it is essential for the power to create illusion in any form to come to an end. And the power to create illusion is the power of desire, the power of ambition, of wanting to be this and not wanting to be that.	तो अब यदि आपने विकल्पों को त्याग दिया है और स्वयं अपने अस्तित्व के ढाँचे के साथ या उस नये ढाँचे के साथ या उस नये ढाँचे के साथ जो आपको लगता है कि वक्ता निर्मित कर रहा है, आप समाजस्य बैठाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, तो यहाँ तक पहुँचने के बाद आप पायेंगे कि अब आपका मस्तिष्क केवल बाहरी परिस्थितियों और चुनौतियों के संदर्भ में ही कार्य कर सकता है और इसे ऐसा ही करना भी चाहिए। इस प्रकार मस्तिष्क पूर्णतः शांत हो जाता है। इसका अर्थ है कि उसके अनुभवों का प्रभुत्व अब समाप्त हो चुका है और इसलिए यह भ्रांतियो का सृजन करने में अब असमर्थ है। यह पता लगाने के लिए कि सत्य क्या है यह परमावश्यक है कि किसी भी रूप में भ्रांति का सृजन करने की जो हमारी शक्ति है वह पूर्णतः समाप्त हो जाए। जो शक्ति भ्रांतियों का निर्माण करती है वह शक्ति आकांक्षा की है, महत्वाकांक्षा की है, ऐसा होने और वैसा नहीं होने की जो इच्छा है, उसकी है।
So, the brain must function in this world with reason, with sanity, with clarity; but inwardly it must be completely quiet.	अतः यह आवश्यक है कि इस संसार में मस्तिष्क विवेकपूर्वक स्वस्थचित्त दशा में स्पष्टता के साथ कार्य करे परंतु आंतरिक रूप से यह पूर्णतः शांत बना रहे।

We are told by the biologists that it has taken millions of years for the brain to develop to its present stage, and that it will take millions of years to develop further. Now, the religious mind does not depend on time for its development. I wish you could follow this. What I want to convey is that when the brain - which must function in its responses to the outward existence - becomes quiet inwardly, then there is no longer the machinery of accumulating experience and knowledge, and therefore inwardly it is completely quiet but fully alive, and then it can jump the million years.	जीवविज्ञानियों का कहना है कि मानव मस्तिष्क को विकसित होकर मौजूद स्थिति तक आने में लाखों वर्ष लगे हैं तथा इसको और अधिक विकसित होने में पुनः लाखों वर्ष लगेंगे। परन्तु धार्मिक मन अपने विकास के लिए समय पर निर्भर नहीं है। जो बात मैं आप तक पहुँचाना चाहता हूँ वह यह है कि मस्तिष्क जिसे बाह्य परिस्थितियों का सामना करने के लिए कार्य करना ही चाहिए जब आंतरिक रूप से शांत हो जाता है तब अनुभव और ज्ञान का संग्रह करने की प्रक्रिया और गतिविधि शेष नहीं रह जाती। इस प्रकार मस्तिष्क अब आंतरिक रूप से पूर्णतः शांत है, परंतु समग्र रूप से जीवंत है, और अब यह लाखें वर्षो के पार छलाँग लगा सकता है।
So, for the religious mind there is no time. Time only exists in that state of a continuity moving to a further continuity and achievement. When the religious mind has destroyed the authority of the past, the traditions, the values imposed upon it, then it is capable of being without time. Then it is completely developed. Because, after all, when you have denied time you have denied all development through time and space. Please, this is not an idea; it is not a thing to be played with. If you have gone through it, you know what it is, you are in that state; but if you have not gone through it then you cannot just pick up these ideas and play with them.	अतः धार्मिक मन के लिए समय नहीं है। समय का अस्तित्व केवल उस सातत्य-क्रम में होता है जो एक उपलब्धि से दूसरी तक चलता चला जाता है। जब कोई धार्मिक मन अपने ऊपर आरोपित अतीत का तथा परंपराओं और मूल्यों का उन्मूलन कर देता है तो वह समय के बिना जीने में समर्थ हो जाता है। ऐसी अवस्था में यह पूर्णतः विकसित मन कहा जा सकता है, क्योंकि जब आपने समय को ही अस्वीकार कर दिया है तो स्पष्ट है कि आपने देश और काल के आयाम में घटित होने वाले समस्त विकास को भी अस्वीकार कर दिया है। कृप्या इसे ठीक से समझ लें कि यह कोई विकल्प नहीं है और न ही कोई खेलने की वस्तु है। यदि आप इससे गुजरे हैं तो आप जानते होंगे कि यह क्या चीज है, आप स्वयं इस अवस्था में होंगे, परंतु यदि आप इससे नहीं गुजरे हैं तो आप ऐसा कदापि नहीं कर सकते कि इन बातों को विकल्प के रूप में लेकर इनसे खेलने लग जाएँ।
So, you find destruction is creation; and in creation there is no time. Creation is that state when the brain, having destroyed all the past, is completely quiet and therefore in that state in which there is no time or space in which to grow, to express, to become. And that state of creation is not the creation of the few gifted people - the painters, musicians, writers, architects. It is only the religious mind that can be in a state of creation. And the religious mind is not the mind that belongs to some church, some belief, some dogma - these only condition the mind. Going to	इस प्रकार आप देखते हैं कि विनाश ही सृजन है और सृजन में समय नहीं। सृजन का अर्थ है वह अवस्था जिसमें मस्तिष्क संपूर्ण अतीत को विनष्ट करने के बाद पूर्णतः शांत हो जाता है और इसलिए इस अवस्था में कोई देश और काल नहीं होता जिस आयाम में हम विकसित हों, स्वयं को अभिव्यक्त करें, या कुछ बनने का प्रयत्न करें। सृजन की यह अवस्था उन गिने-चुने प्रतिभाशाली लोगों का सृजन नहीं है जो चित्रकार, संगीतकार, लेखक या शिल्पकार होते हैं। वस्तुतः केवल धार्मिक मन ही सृजन की अवस्था में हो सकता है, और धार्मिक मन का अर्थ यह मन नही है जो किसी मंदिर, विश्वास या मतग्रह से सरोकार रखता है – ये ही मन को बद्ध करती है। हर सुबह मंदिर जाना और पूजा पाठ करना आपको एक धार्मिक व्यक्ति नहीं बनाता, यद्यपि प्रतिष्ठित समाज

church every morning and worshipping this or that does not make you a religious person, though respectable society may accept you as such. What makes a person religious is the total destruction of the known.	आपको इसी रूप में स्वीकार करता है। जो चीज किसी व्यक्ति को धार्मिक बनाती है वह है ज्ञात का समग्र विनाश।
In this creation there is a sense of beauty; a beauty which is not put together by man; a beauty which is beyond thought and feeling. After all, thought and feeling are merely reactions; and beauty is not a reaction. A religious mind has that beauty - which is not the mere appreciation of nature, the lovely mountains and the roaring stream, but quite a different sense of beauty - , and with it goes love. I do not think you can separate beauty and love. You know, for most of us love is a painful thing, because with it always come jealousy, hate, and possessive instincts. But this love of which we are talking is a state of the flame without the smoke.	ऐसे सृजन में सौंदर्य का बोध होता है एक ऐसा सौंदर्य जो मनुष्य द्वारा निर्मित नहीं है, एक ऐसा सौन्दर्य जो विचार और भाव के परे है। वस्तुतः विचार और भाव भी प्रतिक्रियाएँ ही हैं परंतु सौन्दर्य प्रतिक्रिया नहीं है। धार्मिक मन के पास वह सौन्दर्य बोध होता है जो मात्र प्रकृति का, सुंदर पहाड़ों तथा गरजते झरने का रसास्वादन नहीं बल्कि भिन्न प्रकार का सौन्दर्य–बोध होता है, और इससे उपजता है प्रेम। मुझे नहीं लगता कि आप सौन्दर्य और प्रेम को अलग–अलग कर सकते हैं। हममें से अधिकांश लोगों के लिए प्रेम एक पीड़ादायी चीज है क्योंकि प्रेम के साथ हमेशा ईर्ष्या, घृणा और एक दूसरे पर अधिकार जमाने की वृत्तियाँ जुड़ी होती हैं। लेकिन हम जिस प्रेम की बात कर रहे हैं वह आग की एक ऐसी लपट है जिसमें धुआँ नहीं।
So, the religious mind knows this complete, total destruction, and what it means to be in a state of creation - which is not communicable. And with it there is the sense of beauty and love, which are indivisible. Love is not divisible as divine love and physical love. It is love. And with it goes, naturally, without saying, a sense of passion. One cannot go very far without passion - passion being intensity. It is not the intensity of wanting to alter something, wanting to do something, the intensity which has a cause so that when you remove the cause the intensity disappears. It is not a state of enthusiasm. Beauty can only be when there is a passion which is austere; and the religious mind, being in this state, has peculiar quality of strength.	अतः धार्मिक मन इस संपूर्ण और समग्र विनाश को जानता है तथा वह यह भी जानता है कि सृजनावस्था में होने का क्या अर्थ है। यह सृजनावस्था कथनीय नहीं है तथा इससे जुड़ा है सौन्दर्य और प्रेम का वह बोध जो अविभाज्य है। प्रेम को दैविक प्रेम और दैहिक प्रेम की श्रेणियों में नहीं बाँटा जा सकता। वह मात्र प्रेम है। और कहने की जरूरत नहीं कि इस प्रेम के साथ स्वभावतः एक उत्कट आवेश का बोध जुड़ा है। इस उत्कटता के बिना कोई व्यक्ति कुछ कर नहीं सकता उत्कटता अर्थात तीव्रता। यह कुछ बदलने की, कुछ करने की तीव्रता नहीं है। जिस तीव्रता के पीछे कोई कोई कारण है उस कारण को यदि हटा लिया जाए तो वह तीव्रता लुप्त हो जाएगी। यह तीव्रता कोई उत्साह की दशा भी नहीं है। सौन्दर्य वहीं हो सकता है जहाँ संयम से भरा एक उत्कट आवेश हो। इस अवस्था में रहने वाला धार्मिक मन एक विलक्षण गुणवत्ता वाला बल रखता है।
You know, for us strength is the result of will, of many desires woven into the	जैसा कि आप जानते हैं, हमारे लिए बल वह चीज है जो

rope of will. And that will is a resistance with most of us. The process of resisting something or pursuing a result develops will, and that will is generally called strength. But the strength of which we are talking has nothing to do with will. It is a strength without a cause. It cannot be utilized, but without it nothing can exist.	इच्छाशक्ति का परिणाम है अर्थात् अनेक आकांक्षाओं के आपस में गुथने के फलस्वरूप जो इच्छाशक्ति की रस्सी बनती है उसी का परिणाम है बल। और यह इच्छाशक्ति हममें से अधिकांश लोगों के लिए एक प्रतिरोध है। किसी चीज का प्रतिरोध करने की प्रक्रिया अथवा किसी परिणाम का अनुसरण करना इच्छाशक्ति को विकसित करता है और साधारतः इसी इच्छाशक्ति को बल कहा जाता है। लेकिन हम जिस बल की बात कर रहे हैं उसका इच्छाशक्ति से कोई लेना–देना नहीं है। यह एक ऐसा बल है जो अकारण है। इसका उपयोग नहीं किया जा सकता परन्तु इसके बिना किसी चीज का अस्तित्व भी नहीं हो सकता।
So, if one has gone so deeply in discovering for oneself, then the religious mind does exist; and it does not belong to any individual. It is the mind, it is the religious mind, apart from all human endeavours, demands, individual urges, compulsions and all the rest of it. We have only been describing the totality of the mind, which may appear divided by the use of the different words; but it is a total thing, in which all this is contained. Therefore such a religious mind can receive that which is not measurable by the brain. That thing is unnameable; no temple, no priest, no church, no dogma can hold it. To deny all that and live in this state is the true religious mind.	इस प्रकार यदि किसी व्यक्ति ने अपने भीतर इतनी गहराई तक खोज की है तो वह पायेगा कि धार्मिक मन का सचमुच अस्तित्व है; और यह किसी व्यक्ति विशेष का नहीं होता। यह मन है यह धार्मिक मन है, जो मनुष्य की समस्त चेष्टाओं, चुनौतियों, व्यक्तिगत प्रेरणाओं तथा दबावों इत्यादि से परे है। हम केवल मन की समग्रता का ही वर्णन करते हैं और विभिन्न शब्दों के प्रयोग के कारण यह समग्रता विभाजित प्रतीत हो सकती है परंतु यह एक समग्र मन है जिसमें यह सब कुछ समाया हुआ है। अतः ऐसा धार्मिक मन उस चीज को ग्रहण कर सकता है जिसे मस्तिष्क द्वारा नहीं मापा जा सकता। उस चीज का कोई नाम नहीं है। कोई मंदिर, गिरजाघर, पुरोहित, रूढ़िवाद उसे धारण नहीं कर सकता। उन सबको अस्वीकार कर इस अवस्था में जीना सच्चा धार्मिक मन है।
J. Krishnamurti Saanen 9th Public Talk 13th August 1961	सानेन, स्विटजरलैंड, १३ अगस्त १९६१
	के. एफ. टी. इंगलैंड ५२, १९८७